अध्ययन सामग्री
यू. जी. सेमे. II
यूनिट - 3

डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन महाविद्यालय, आरा

मेघदूत एक प्रबन्धात्मक गीतिकाव्य है, विवेचना करें
अथवा
गीतिकाव्य के रूप में मेघदूत का मूल्यांकन करें।

संस्कृत के गीतिकाव्यों में महाकवि कालिदास के 'मेघदूत' का स्थान अग्रगण्य है।

गीतिकाव्य संस्कृत साहित्य के ऐसे काव्य-ग्रन्थ हैं जिनमें उन्मुक्त मानवीय भावों एवं उच्छ्वासों को प्रमुख स्थान दिया गया है। गीति का अर्थ है हृदय की रागात्मक भावना को छन्दबद्ध रूप में प्रकट करना। गीतियों का निर्माण तब होता है जब कवि का हृदय सुख-दुःख के तीव्र अनुभव से आप्लावित हो जाता है और वह अपनी रागात्मक अनुभूति को परगम्य अनुभूति के रूप में परिणत करता है। इसके लिए कवि जिन मधुर भावापन्न रससान्द्र उक्तियों का माध्यम अपनाता है वही होती हैं गीतियाँ। गीतिकाव्यों में कवि सर्वथा उन्मुक्त होकर जीवन और जगत् के अपने निजी अनुभवों को छान्दसिक गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है और इस क्षेत्र में प्रकृति उसकी स्वच्छन्द सहचरी होती है।

गीतिकाव्य 'मुक्तक' और 'प्रबन्ध' दोनों प्रकार से उपलब्ध है। 'मुक्तक' से अभिप्राय उस काव्य से है जो स्वयं रसपेशल होता है जबकि 'प्रबन्ध' गीतिकाव्य में किसी भी पात्र अथवा कथानक के सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन न होकर उसके एक अंश का ही सम्यक् वर्णन होता है। गीतिकाव्य में लालित्य एवं माधुर्य का विशेष पुट रहता है।

संस्कृत साहित्य में गीतिकाव्य कई प्रकार से लिखे गए हैं - इनको दो प्रमुख भागों में

अलग किया जा सकता है —

1) स्तोत्र काव्य या भक्ति काव्य
2) श्रृंगार काव्य या संदेश काव्य

जिन गीतिकाव्यों में श्रृंगार की भावना का ही प्राधान्य हो, वह श्रृंगार काव्य होता है। आत्मनिवेदन की तीव्रानुभूति श्रृंगार काव्यों की प्रधानता होती है। संस्कृत में ये श्रृंगार काव्य कई प्रकार के लिखे गए जिनमें दूत पद्धति के काव्य प्रमुख हैं। दूतकाव्यों को सन्देश काव्य भी कहा जाता है जिनमें प्रेमी अथवा प्रेमिका का किसी दूत के माध्यम से अपनी वियुक्त प्रणयि के प्रति प्रणय-सन्देश निवेदित होता है। सन्देश काव्य के दो विभाग होते हैं — पूर्व तथा उत्तर।

पूर्व भाग में नायक अथवा नायिका का वर्णन विरही के रूप में किया जाता है। इसके बाद दूत का दर्शन, उसका विरही द्वारा स्वागत एवं प्रशंसा तथा उसकी शक्ति का वर्णन किया जाता है। पुनः उससे सन्देश पहुँचाने की प्रार्थना की जाती है और गन्तव्य स्थान का मार्ग बतलाया जाता है। उत्तर भाग में गन्तव्य स्थान का वर्णन, ~~बतलाया~~ ~~जाता~~ है। प्रिय या प्रिया के निवास स्थान का विवरण तथा नायक अथवा नायिका की विरह दशा का वर्णन रहता है। तदनन्तर सन्देश सुनाने की प्रार्थना की जाती है तथा सन्देश की सत्यता की पुष्टि के लिए उसे सन्देश भेजने वाले की विशिष्टताओं एवं अन्तरंग जीवन की गुप्त घटनाओं की चर्चा करनी पड़ती है। अन्त में सन्देशवाहक के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए काव्य की समाप्ति की जाती है।

'मेघदूत' गीतिकाव्य के लिए उपरोक्त वर्णित सभी वर्ण्य विषयों से युक्त है जो इसके कथानक से स्पष्ट है।

मेघदूत की कथावस्तु इस प्रकार है —

धनाधीश कुबेर का एक यक्ष कर्तव्यच्युत होने के कारण अलकापुरी से निर्वासित कर दिया जाता है। तदनन्तर अपनी नवपरिणीता से दूर प्रवास काल की दुर्दिन घड़ियों को रामगिरि पर्वत पर वेदना जर्जरित होकर व्यतीत करता है। आठ मास व्यतीत हो जाने पर ज्योंहि आकाश में काले

बादल उमड़ते हैं उसके प्रेम कातर हृदय में उसकी प्राण-प्रिया की स्मृति हरी हो जाती है। वियोग दुःख की अतिशयता के कारण कामार्त हृदय को चेतन और अचेतन का ज्ञान विनष्ट हो जाता है। यक्ष आकाश में सन्तरण करते हुए बादलों की दूत रूप में कल्पना कर उनके माध्यम से अपनी परम विरह विधुरा पत्नी के पास सन्देश भेजना चाहता है। वह अतिनूतन कुटज पुष्प के द्वारा मेघ को अर्घ्य देकर उसका स्वागत करता है तथा उसे रामगिरि से अलकापुरी का मार्ग निर्देशित करता है। मार्ग निर्देशन करते समय कवि ने उन्मुक्त कण्ठ से भारतीय प्राकृतिक सुषमा और नगर, पर्वतों तथा नदियों का मनोहारी वर्णन प्रस्तुत किया है। इसी वर्णन के साथ पूर्वमेघ की समाप्ति हो जाती है। उत्तरमेघ में कवि ने अलका का वर्णन, यक्ष के भवन एवं उसकी विरह विदग्धा प्रिया का चित्र खींचा है। तत्पश्चात् कवि ने यक्ष के संदेश का वर्णन किया है जिसमें मानव हृदय के सौन्दर्य एवं अभिरामता का विमल चित्रण है। वियोगी यक्ष का सन्देश कथन अत्यन्त ही द्रावक एवं प्रेमिल भावोच्छ्वास से पूर्ण है। इसके प्रारम्भ से अन्त तक यौवन के विलासों की कल्पना सिंचित है तथा उसमें निहित वियोग का मधुर राग हमारी हृदय तंत्री के तार को स्पंदित कर देता है।

बादल कहीं भ्रम में पड़कर किसी अन्य युवती को उसकी वियोग कथा न सुना दे, इस बात से सावधानी बरतने के लिए यक्ष अपनी पत्नी का सौन्दर्य वर्णन करते हुए बताता है-

तन्वीश्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकित हरिणी प्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां
या तत्रस्याद्युवति विषये सृष्टिराद्येव धातुः॥

इसके आगे कवि यक्ष के माध्यम से बादलों को और भी ऐसे चिह्नों के बारे में बतलाता है जिससे उसका संदेश उचित पात्र तक पहुँचा सके। मार्ग-निर्देश के बीच ही यक्ष अपनी भी लोकातीत विरह दशा का वर्णन करता चलता है। अन्त में वह कहता है कि शाप की अवधि पूरा होते ही हम दोनों एक दूसरे से मिल जाएंगे और समस्त दुःख सुख में परिवर्तित हो

उठेंगे।

वस्तुतः मेघदूत एक विरह पीड़ित उत्कंठित हृदय की मर्मभरी आह है। प्रत्येक पद में उसकी विकलता, उसकी विह्वलता, उसकी कातरता, उसके स्पंदन एवं उसके क्रन्दन की करुण तान झंकृत हो रही है। इस प्रकार मेघदूत में गीतिकाव्य के सभी तत्त्व रमणीय रूप से विराजमान हैं। अतः निस्सन्देह मेघदूत गीतिकाव्य का श्रेष्ठतम उदाहरण है।